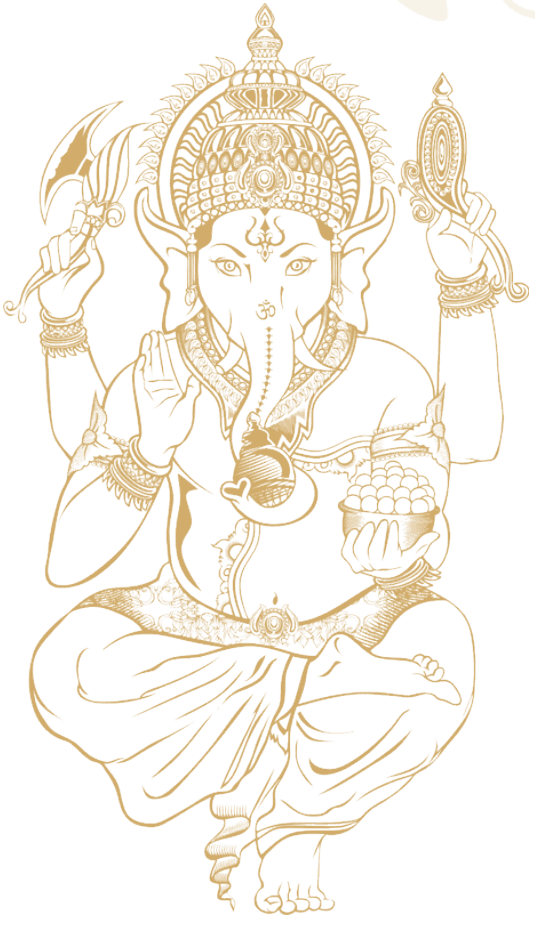

Mr. S bhargava

Ms. Prachi pateria

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119028802

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24/03/1995	जन्म तिथि	01/01/2000
शुक्रवार	दिन	शनिवार
घंटे 17:17:00	जन्म समय	18:30:50 घंटे
घटी 27:49:40	जन्म समय(घटी)	29:10:25 घटी
India	देश	India
Katni	स्थान	Chhatarpur
23:47:00 उत्तर	अक्षांश	24:54:00 उत्तर
80:29:00 पूर्व	रेखांश	79:35:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:08:04	स्थानिक संस्कार	-00:11:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:09:07	सूर्योदय	06:56:33
18:20:20	सूर्यास्त	17:33:25
23:47:36	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:11

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
शुक्र 12वर्ष 10मा 24दि	25:53:37	सिंह	लग्न	कर्क	00:00:13	राहु 0वर्ष 0मा 10दि
मंगल	09:34:42	मीन	सूर्य	धनु	16:33:32	शनि
16/02/2024	18:03:57	धनु	चंद्र	तुला	19:58:42	12/01/2016
16/02/2031	19:22:20	कर्क व	मंगल	कुंभ	04:08:34	12/01/2035
मंगल 15/07/2024	20:53:53	कुंभ	बुध	धनु	08:06:07	शनि 15/01/2019
राहु 02/08/2025	21:29:21	वृश्चि	गुरु	मेष	01:24:06	बुध 24/09/2021
गुरु 09/07/2026	01:45:16	कुंभ	शुक्र	वृश्चि	07:45:49	केतु 03/11/2022
शनि 18/08/2027	23:27:44	कुंभ	शनि व	मेष	16:32:30	शुक्र 02/01/2026
बुध 14/08/2028	12:16:05	तुला व	राहु व	कर्क	10:05:51	सूर्य 15/12/2026
केतु 10/01/2029	12:16:05	मेष व	केतु व	मक	10:05:51	चन्द्र 16/07/2028
शुक्र 12/03/2030	05:57:40	मक	हर्ष	मक	20:57:29	मंगल 24/08/2029
सूर्य 18/07/2030	01:25:58	मक	नेप	मक	09:20:29	राहु 30/06/2032
चन्द्र 16/02/2031	06:41:39	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	17:36:11	गुरु 12/01/2035

लग्न-चलित

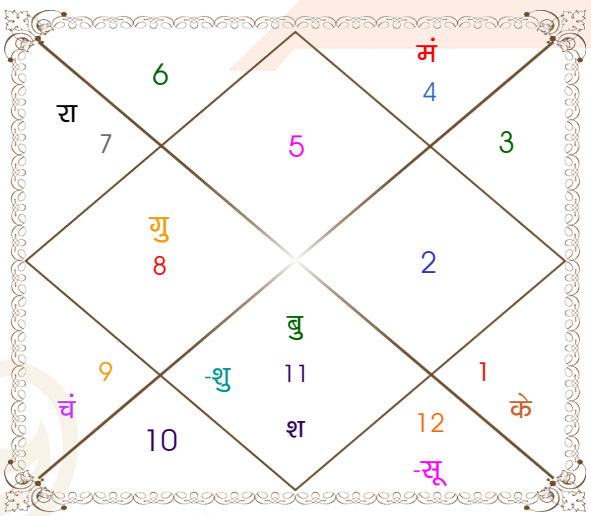

लग्न-चलित

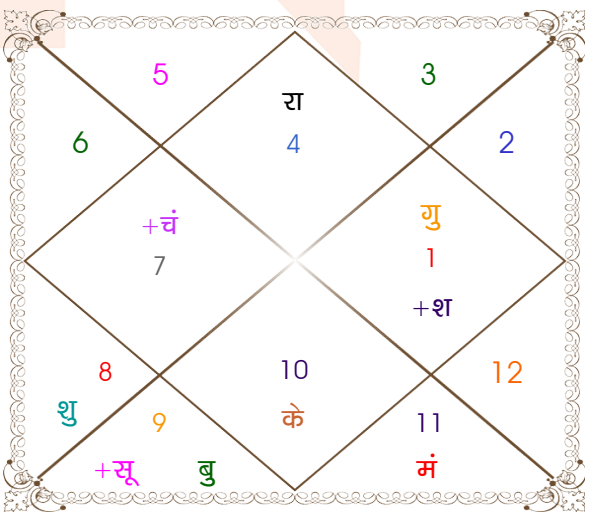

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	महिष	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शुक्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.00		

डतण्ै ईींतहंअं का वर्ग सर्प है तथा डेण् च्तंबीप चंजमतपं का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्ै ईींतहंअं और डेण् च्तंबीप चंजमतपं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्ै ईींतहंअं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण्ै ईींतहंअं कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण्ै ईींतहंअं कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण् च्तंबीप चंजमतपं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण् च्तंबीप चंजमतपं कि कुण्डली में अष्टम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डतण्ै ईींतहंअं कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्ै ईींतहंअं तथा डेण् च्तंबीप चंजमतपं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।